PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-27 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जनवरी–मार्च, 2022

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

1

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1.संत नामदेव के मानवतावादी तथा जाति सम्बन्धी विचार 6
–डॉ विरेन्द्र यादव........ 6
2.A Psychological Study Of Female Criminality 9
-Dr. Seema Prakash 9
3.पर्यावरण शिक्षा : आज की आवश्यकता 12
–डा0 पूजा सिन्हा........ 12
4.चित्रा मुद्गल की कहानियों में आधुनिक समस्याएँ–*देशमुख संजय मारोतराव*........ 14
5.समानांतर फिल्म–आंदोलन की विचार–भूमि 16
–सुभाषचन्द्र गुप्त 16
6.प्रवासी हिंदी कहानियों में प्रवासी जीवन की समस्याएँ 21
–मनीषा........ 21
7.माँसाहार की हानियाँ व शाकाहार के लाभ 24
–डा0सुमन महता 24
8.Untold Story Of Savitri Pal Salve 25
- *Jyoti Agnihotri,* 25
9.पर्यावरण और कला–एक अध्ययन........ 28
–डॉ.प्रेमलता कश्यप, ... 28
10.हिन्दी लघु नाटकों का शिल्पविधान........ 30
–डॉ.बंदना ठाकुर 30
11.तुलसीदास जी और उनके युग का चित्रण........ 31
–रेनू कुमारी, ... 31
12.GOD PARTICLES : CREATOR OF MASS 33
-*Kuldeep Singh*........ 33
13.'संत काव्य में सांस्कृतिक नवचेतना के उद्दीप्त स्वर' 34
–डॉ0 स्नेह लता गुप्ता 34
14.अभिनव आयामों का कृषि के सतत् विकास में योगदान........ 38
–चन्द्रप्रभा........ 38
15.वाल्मीकीय रामायण में श्रीराम के आदर्शो का उल्लेख 41
–डा0 वन्दना सक्सेना,........ 41
16.आधुनिक समाज और धर्म........ 44
–डॉ0(श्रीमती) सुनीता अवस्थी 44
17.Judicial Response to Issues of Trafficking in Women and Children: An Overview 48
- *Prof. Ashok Kumar Rai*........ 48
18.Application Of Applied Buddhism And Its Impact On Persons Daily Life........ 51
-Dr. Nirja Sharma........ 51
19.बौद्ध धर्म–दर्शन........ 53

5.समानांतर फिल्म–आंदोलन की विचार–भूमि

–सुभाषचन्द्र गुप्त

फिल्म–कला यकीनन कला–जगत की अद्भूत उपलब्धि है जिसमें एक ओर विज्ञान की शक्ति है तो दूसरी ओर कला का सौंदर्य। दूसरे शब्दों में कहें तो फिल्म–कला वैज्ञानिक और कलाकार के संयुक्त प्रयास का प्रतिफल है। विज्ञान ने यांत्रिक उपकरणों द्वारा कला के एक नव्य माध्यम को जन्म दिया और कलाकार ने इस नव्य कला–माध्यम को अन्य कला–रूपों के संयोग से एक ऐसी कला का स्वरूप दिया जो प्रभाव और प्रसार के सामर्थ्य में विस्मयकारी रहा है। पर इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि फिल्म का प्रदर्शित रूप जितना ही सरल और संप्रेषणीय होता है, निर्माण की प्रक्रिया उतनी ही जटिल, टेक्नीकल और बारीक होती है। फिल्म–निर्माण की मूल प्रेरणा व्यक्तिगत हो सकती है, पर निर्माण की प्रक्रिया सामूहिक होती है जिसमें पटकथा–लेखक, निर्देशक, कलाकार तकनीशियन आदि की एक विशाल 'टीम' की भागीदारी अनिवार्य होती है। जाहिर है, इस पूरी प्रक्रिया में 'वृहद पूंजी' की आवश्यकता होती है और पूँजी–निवेश मुनाफा की माँग करता है। इस पूँजीजनित अनिवार्यता के क्रम में कलाकार और तकनीशियन के साथ एक तीसरा वर्ग भी जुड़ा है–व्यापारीवर्ग जिसे बाजार की भाषा में 'प्रायोजक' या 'फिनान्सर' कहा जाता है। इस तरह दो परस्परविरोधी ध्रुवों का एक नया कला–समीकरण विकसित हुआ है। सिने व्यवसायी का उद्देश्य दर्शकों का मनोरंजन कर अधिकाधिक मुनाफा अर्जित करना रहा है, जबकि सिने–कलाकार का लक्ष्य मूल्यपरक फिल्मों का निर्माण करना रहा है। इन परस्परविरोधी उभयपक्षों में पूँजीनिवेशक की इच्छा, रूचि और दृष्टि का नियंत्रण ही फिल्म–जगत पर हावी रहा है। जीवन और समाज का संकट जिस तरह गहराता गया है, सिने–जंगत भी संकट की जद में आता गया है। अर्थवाद, उपभोक्तवाद, बाजारवाद का प्रभाव जैसे–जैसे समाज पर गहरा होता गया है, फिल्म कला के सरोकार भी बदले हैं और सिनेमा के शब्दकोष में सामाजिक सरोकार पूर्वापेक्षा सिमटा है। पर यह भी सच है कि समय–समय पर सरोकार संपन्न और सार्थक फिल्में भी सामने आती रही हैं। भारतीय फिल्मों के आरंभिक दौर में फिल्मकार, लेखक, गीतकार, कलाकार आदि सृजन का सुख और अभिव्यक्ति की सार्थकता का पड़ाव तलाश ही लेते थे। सामाजिक दायित्व–बोध उनके भीतर थोड़ा–बहुत टिमटिमाता रहता था। सिनेमा चाहे व्यावसायिक रहा हो या कलात्मक–समाज के प्रति उत्तरदायी होने की कला–चेतना पूरी तरह से निर्वासित कभी नहीं रही है। कथा, संवाद, गीत, गायन, मनोरंजन, अभिनय, संदेश सार्थकता और परिपक्वता की दृष्टि से कई ऐसी फिल्में बनी जो भारतीय सिनेमा की गौरवशाली विरासत है और जिसने देश की बहुसंख्यक आबादी को फिल्मों से जोड़कर संवेदित ने किया है और आंदोलित भी।

दादा फाल्के साहब ने जब भारत में सिनेमा की आधारशिला रखी तब किसी ने सोचा भी नहीं था कि कला का यह माध्यम सामाजिक सरोकार का इतना प्रभावी और सशक्त माध्यम बनेगा। मूक सिनेमा के दौर में ही सन् 1926 में बाबूराम मिस्त्री की फिल्म आयी थी–'साहूकार' जो भारत की तत्कालीन महाजनी सभ्यता की अमानवीयता पर केन्द्रित थी। इसके लगभग बीस वर्षों के बाद चेतन आनंद के निर्देशन में 'नीचा नगर' नामक फिल्म प्रदर्शित हुई जिसने समानांतर फिल्म–निर्माण के लिए वैचारिक जमीन तैयार की। हालाकि उस समय तक कला–फिल्म यानी समानांतर फिल्म की अवधारणा का अंकुरण भी नहीं हुआ था। हिन्दी की समानांतर फिल्मों पर नजर डालें तो एक बात सामने आती है कि समानांतर फिल्म को दुनिया भर में कई नाम दिए गये हैं। न्यू वेभ, पैरलर सिनेमा, आर्ट फिल्म आदि नामों से समानांतर सिनेमा को परिभाषित करने की कोशिश की गयी। सन् 1920 में व्ही0 शांताराम ने 'स्वकरीपाश' (इंडियन साईलॉक) नाम से एक फिल्म बनायी थी जिसमें एक गरीब किसान की जमीन पर स्थानीय जमीन्दार कब्जा कर लेता है और किसान शहर में जाकर मजदूरी करने के लिए विवश हो जाता है। इस फिल्म की पूरी शूटिंग झोपड़पट्टी में हुई थी। यह मूक फिल्म थी और एक तरह से समानांतर फिल्म की जननी थी। सन् 1937 में व्ही0 शांताराम ने 'दुनिया ना माने' नाम से एक फिल्म बनायी थी जिसमें स्त्री–जमीन की संघर्षमयी कहानी थी। इसके बाद 1946 में चेतन आनंद की 'नीचा नगर' फिल्म बनी जिसे सन् 1947 में 'कॉन्स फिल्मोत्सव में उत्कृष्ट फिल्म का अवार्ड मिला। इस तरह यह भारत की पहली फिल्म थी जिसे अन्तरराष्ट्रीय प्रसिद्धि मिली।

दो राय नहीं कि समानांतर फिल्मों का वैचारिक उत्स समाजवादी जीवन–मूल्य रहा है और समाजवादी विचार–चेतना के फैलाव में समानांतर फिल्मों की ऐतिहासिक भूमिका रही है। आजादी के बाद पूरे देश में चल रहे समाजवादी–राजनीतिक आंदोलनों, सामाजिक सुधारों, संघर्षों और व्यवस्थाविरोधी संगठनों की सक्रियता ने भी इस फिल्म–आंदोलन को गहरे रूप में अनुप्राणित किया। साथ ही, विभिन्न वामपंथी लेखकों–विचारकों की कृतियों का गंभीर अध्ययन–मनन समानांतर फिल्मों से जुड़े निर्माताओं–निर्देशकों और फिल्मों के कलाकारों ने किया और अपने

Scanned with OKEN Scanner